UG

Study material for students by History Deptt.
U.G Semester IV ; paper - MJC-06

पुनर्जागरण (Renaissance) : एक परिचय
(An Introduction)

प्रश्न :- 1

पुनर्जागरण से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर - "रेनेंसा (Renaissance)" इटालवी भाषा का शब्द है ; जिसका अर्थ है - पुनर्जन्म। पश्चिमी सभ्यता के विकास में इसका सम्बन्ध चौदहवीं से सोलहवीं शताब्दी के बीच हुई उस सांस्कृतिक प्रगति से है जो प्राचीन यूनानी और रोमन सभ्यता व संस्कृति से प्रभावित थी। वस्तुतः, पुनर्जागरण से तात्पर्य 14 वीं से 16 वीं सदी के यूरोप की उन विराट सामाजिक तथा सांस्कृतिक हलचलों एवं मनुष्य की बौद्धिक एवं कलात्मक ऊर्जा की उस अभिव्यक्ति से है; जिसने यूरोप को मध्यकाल से निकालकर आधुनिक युग में प्रवेश कराया। साथ ही, यह भी कहा जाता है कि पुनर्जागरण विद्वता एवं संस्कृति का ही युग नहीं था, अपितु यह युग पुनर्जागरण की एक ऐसी अनोखी भावना से भी ओतप्रोत था, जिसने जीवन के राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक पक्षों के साथ-साथ बौद्धिक तथा कलात्मक इत्यादि सभी पक्षों को प्रभावित करके उनका स्वरूप ही परिवर्तित कर दिया। जब मध्ययुग के अंत में यूनानी और लैटिन भाषाओं में

Scanned by CamScanner

अर्जित ज्ञान को पुनर्प्रतिष्ठित किया जाने लगा तो इसे पुनर्जागरण कहना ही उचित है। लेकिन, इसने कुछ नई प्रवृत्तियों को भी जन्म दिया; जिनसे कला, साहित्य और विज्ञान के विविध क्षेत्रों में अभूतपूर्व प्रगति हुई जो पुनर्जन्म (Rebirth) नहीं तो और क्या था! आधुनिक युग के निर्माण में इसकी महती भूमिका थी। अनेक वर्षों तक इसे आधुनिक विश्व के प्रवेश-द्वार की कुंजी माना जाता था। पुनर्जागरण से 'सृजनात्मक व्यक्ति' की अवधारणा दुनिया के समक्ष आई जिसने कालांतर में समस्त औपनिवेशिक देशों में एक नवीन चेतना का संचार किया। इस सृजनात्मक व्यक्ति में ईश्वर पर भरोसा किए बग़ैर अपना भाग्य बदलने की क्षमता थी। उसमें अपने बारे में स्वयं निर्णय लेने और अपनी दक्षता से आगे बढ़ने का सामर्थ्य था। ऐसा व्यक्ति ही आधुनिक मानव कहा जा सकता था। जबकि मध्यकालीन अंधकार युग में व्यक्ति पर चर्च का कठोर नियंत्रण था। इस धारणा से सामाजिक चिन्तन तथा राजनैतिक क्रियाकलाप को अत्यधिक प्रेरणा प्राप्त हुई। सामान्य तौर पर कहा जा सकता है कि इस युग में लोगों ने मध्यकालीन संकीर्णता छोड़कर स्वयं को नवीन खोजों, नवीनतम विचारों तथा सामाजिक, सांस्कृतिक एवं बौद्धिक उन्नति से सुसज्जित किया।

Scanned by CamScanner

पुनर्जागरण : विचारकों की दृष्टि में

विभिन्न युगों के विद्वानों ने अपने तौर-तरीके से पुनर्जागरण को परिभाषित करने का प्रयास किया। 15वीं से 17वीं शताब्दी के मानवतावादियों के अनुसार पुनर्जागरण अध्ययन एवं चिन्तन की प्रणाली का पुनर्जीवन था। वस्तुतः, यह अध्ययन की प्रणाली का ही पुनर्जीवन नहीं; वरन् 'एक दृष्टि' का भी पुनर्जीवन था। इस दृष्टि से इसकी प्रकृति को दुबारा समझने का प्रयास किया गया। 18वीं शताब्दी के विद्वानों ने पुनर्जागरण को सांस्कृतिक उत्थान का काल करार दिया, वहीं 19वीं सदी के विद्वानों ने 13वीं से 16वीं सदी तक की प्रमुख सामाजिक, सांस्कृतिक हलचलों को पुनर्जागरण का नाम दिया।

1860 ई० में जैकब बर्कहार्ट (Jacob Workheart) ने अपनी पुस्तक 'The Civilization of The Renaissance in Italy' (द सिविलाइजेशन ऑफ दि रेनेंसा इन इटली) में पुनर्जागरण एवं मानवतावाद की प्रभावशाली धारणाओं को सूत्रबद्ध किया। इनके अनुसार पुनर्जागरण एक लम्बी नैतिक एवं बौद्धिक जड़ता के बाद अस्तित्व में आया तथा यह मानव-चेतना के क्षेत्र में एक बड़ा ही क्रांतिकारी कदम था। इसमें इटली की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण थी। हालाँकि, बाद में इसकी पुनर्जागरण सम्बन्धी अवधारणा

Scanned by CamScanner

की आलोचना होने लगी; क्योंकि उसने इटली की भूमिका पर अत्यधिक बल दिया तथा दूसरी ओर मध्ययुग को अंधकार तथा असभ्यतापरक युग माना। अब यह स्वीकार किया जाने लगा कि पुनर्जागरण नये आन्दोलन की तुलना में तत्कालीन मानसिक स्थिति को ही अधिक व्यक्त करता है।

पुनर्जागरण से उन सभी बौद्धिक परिवर्तनों का बोध होता है; जो मध्ययुग के अंत में दृष्टिगोचर हो रहे थे; अर्थात् इसमें मध्ययुग की समाप्ति तथा आधुनिक युग के आरंभ तक के बौद्धिक परिवर्तनों का समावेश है। परिवर्तनों से तात्पर्य है – सामंतवाद की अवनति, प्राचीन साहित्य का अध्ययन, राष्ट्रीय राज्यों का उत्थान, आधुनिक विज्ञान का आरम्भ, छापाखाना का आविष्कार, बारूद एवं कुतुबनुमा का उपयोग, नये व्यापारिक मार्गों की खोज, आरम्भिक पूँजीवाद का आरम्भ इत्यादि।

पुनर्जागरण मानव के स्वातंत्र्यप्रिय लाइसी विचारों को, जो मध्ययुग में धर्माधिकारियों के द्वारा बन्दी बना लिये गये थे; को अभिव्यक्त करता है।

फ्रांसीसी विद्वान् जुल्स मिशलेट (Jules Michelet) ने पुनर्जागरण की व्याख्या करते हुए कहा कि पुनर्जागरण के दो महत्वपूर्ण आयाम थे। प्रथम 'दुनिया की खोज' तथा द्वितीय 'मानव की खोज'। 'दुनिया की खोज से तात्पर्य 15 वीं एवं 16 वीं सदी की

Scanned by CamScanner

उन भौगोलिक उपलब्धियों से है जिन्होंने अटलांटिक, प्रशांत एवं हिन्द महासागर को व्यापार के लिए खोला और पुरानी दुनिया के लोगों का नई दुनिया अर्थात् अमेरिका, दक्षिण अफ्रीका, भारत एवं आस्ट्रेलिया से परिचय कराया। कोलम्बस, वास्कोडिगामा, मैगलन जैसे खोजी नाविकों ने नई दुनिया की खोज में अग्रणी भूमिका निभाई। दूसरी ओर वैज्ञानिक अन्वेषण ने विश्व के स्वरूप के संदर्भ में लोगों की अवधारणा को परिवर्तित कर दिया। कॉपरनिकस ने टॉलमी तथा अरस्तू के इस विचार— कि "पृथ्वी ब्रह्मांड के केन्द्र में है; और सभी आकाशीय पिण्ड वृत्तीय कक्षाओं में उसकी परिक्रमा करते हैं"— इसके विपरीत सिद्धान्त प्रस्तुत किया। कॉपरनिकस ने कहा कि ब्रह्मांड के केन्द्र में पृथ्वी नहीं, बल्कि सूर्य है। पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है तथा 24 घंटे में एक चक्कर पूरा करती है। उनके सिद्धान्त से स्पष्ट हो गया कि ब्रह्मांड असीम है और पृथ्वी इस ब्रह्मांड का बहुत छोटा भाग है। इस प्रकार, कॉपरनिकस, न्यूटन एवं गैलीलियो जैसे चिन्तकों एवं वैज्ञानिकों के 'एक खुले विश्व एवं उसमें एक नन्ही सी पृथ्वी' वाला यह विचार 'उस बंद विश्व वाले' विचार के लिए विध्वंसक सिद्ध हुआ जिसे ईश्वर द्वारा निर्मित तथा संचालित माना गया।

पुनर्जागरण मानव की खोज है; क्योंकि

Scanned by CamScanner

इसमें मानव तथा प्रकृति के सम्बन्ध को दुबारा पहचानने का प्रयास शामिल है। इसके अन्तर्गत मानव की शक्ति के उस पक्ष के महत्व को रेखांकित किया गया; जिसके द्वारा 'मध्यकालीन पोपशाही' को अस्वीकार किया गया तथा विकसित एवं स्वस्थ दृष्टिकोण का अवलम्बन किया गया।

'मानवतावाद' पुनर्जागरण का एक महत्वपूर्ण तत्व है। इसमें मानव की प्रतिष्ठा, उसके गौरव तथा उसके अधिकारों पर बल दिया गया है। इसके अन्तर्गत चिन्तन का रूख निश्चित रूप से दैवीय विषयों से हटकर मानवीय विषयों की ओर हो गया। इसमें मानव की अनिवार्य श्रेष्ठता और प्रतिष्ठा पर बल दिया गया। मानव की व्यापक सृजन-शक्ति की क्षमता में अटूट आस्था व्यक्त की गयी। यह व्यक्ति की स्वतंत्रता एवं उसके अविछिन्न अधिकारों की घोषणा करता है। फलस्वरूप व्यक्तिवाद का विकास हुआ। व्यक्तिवाद अपनी समस्त शक्ति एवं दुर्बलताओं के बावजूद व्यक्ति के महत्व पर बल देता है। इन मानवतावादी विचारों को पुनर्जागरणकालीन कला एवं साहित्य में पर्याप्त स्थान मिला।

संक्षेप में, पुनर्जागरण ने यूरोप के लोगों में एक नई ज्ञानपिपासा पैदा की, तर्क को प्रतिष्ठित किया, विचार-स्वातंत्र्य को आगे बढ़ाया और भौतिकवाद का मार्ग प्रशस्त किया।

Scanned by CamScanner

Study material for students by History Dept.

B.A. Part-I (Hons.); Paper-II

• Renaissance : An Introduction

(पुनर्जागरण : एक परिचय)

By Dr. Rajiv Nayan
Department of History,
Jagjiwan College, Ara

Scanned by CamScanner